विशेष अतिथि रचनाकार

श्री मधुप पांडेय

हास्य, व्यंग्य, गम्भीर सृजन, हर विधा में जो हैं अव्वल,
जिनके काव्य सृजन में शामिल जीवन की हर हलचल,
शब्दों के जो शिल्पी हैं और जज़्बातों के जादूगर,
ऐसे श्री मधुप जी आज हैं, 'रेल दर्पण' के हमसफर!

प्रधान सम्पादक

देश : एक स्थिति !

भूखे हैं खेत और प्यासी है रेत,
कैसे फिर सम्भव है सुख का अभिषेक?
गढ़ते कुछ नहीं और बढ़ते हैं अंक,
प्रगति के थोथे ही बजते हैं शंख,
छपते अखबारों में झूठे अभिलेख,
कैसे फिर सम्भव है सुख का अभिषेक?
ऊँचा संकल्प मगर तोड़ लिये पंख,
सीमाएँ मार रहीं रह-रहकर डंक,
जन-मन सह पाएगा कितना अतिरेक?
कैसे फिर सम्भव है सुख का अभिषेक?
हारा है सत्य ज्यों युधिष्ठिर का दाँव,
आस्थाएँ छोड़ गयीं-कान्हा का गाँव,
बिकता चौराहे पर-गीता उपदेश,
कैसे फिर सम्भव है सुख का अभिषेक?

मधुप पांडेय

11, देवताले विन्यास, अंबाझरी उद्यान के पास, नागपुर-440 033,

मार्ग ! दर्शन !!

बहुत दिन गुना और बाद में हमने उनको चुना,
यह सोचकर कि वे समाज सेवा में
अपना जीवन अर्पण करेंगे,
हमारा 'मार्ग दर्शन' करेंगे।
परंतु हाय! चुनकर आते ही
उन्होंने अपने आप को राजनीति से जोड़ लिया!
'मार्ग दर्शन' तो दूर रहा,
'मार्ग' में 'दर्शन' देना भी छोड़ दिया!

शोक सभा / लोक सभा

'शोक सभा' में एक वक्ता बोलता है,
और हर श्रोता सुनता है।
मृतक के गुणों पर चिंतन-मनन करता है,
सद्गुणों को मन में गुनता है।
जबकि 'लोक सभा' में 'स्पीकर' चुपचाप बैठकर,
अपने सिर को धुनता है।
क्योंकि हर सदस्य बोलता है परंतु किसी की भी बात,
कोई सदस्य नहीं सुनता है!

हैसियत !

दूल्हे ने दुल्हन से कहा-
"मेरी इच्छा दहेज में कार लेने की है।
क्या तुम्हारे पिताजी की हैसियत उसे देने की है?"
उत्तर मिला-"श्रीमान, विवाह को मत समझो खेल।
मेरे पिताजी तो दे सकते हैं रेल।
चाहो तो आजमा लो!
हाँ, पहले अपने पिताजी से कहकर
मेरे नगर से अपने नगर तक रेल पटरी बिछवा लो!!"

सतर्क संकट

दुर्घटनाग्रस्त मित्र अस्पताल के बिस्तर पर पड़ा था,
मित्र का परिवार उसे घेरकर खड़ा था।
मैंने पूछा- "क्या कार चलाते समय
तू मन ही मन कोई किस्सा गढ़ रहा था ?"
वह बोला- "नहीं भाई, दुर्घटना तब हुई जब मैं चौराहे
पर लगा 'दुर्घटना से कैसे बचें?' पढ़ रहा था!"

वैचारिक आमंत्रण

आपके भीतर छिपा हुआ है एक अनूठा रचनाकार, उसे उजागर करने का सपना हम करते हैं साकार,
आप हमें भेजिये विचार, हम देंगे उनको आकार, रेल दर्पण है, वैचारिक संगम का सार्थक आधार!

'रेल दर्पण' का अगला अंक जनवरी, 2012 में प्रकाशित होगा। इस अंक में प्रकाशनार्थ अपनी मौलिक रचनाएँ आप मौलिकता के प्रमाणपत्र सहित सुवाच्य स्वरूप में हमें 31 अक्टूबर, 2011 तक या इससे पहले अग्रांकित पते पर डाक के ज़रिये भेज सकते हैं, या फिर इसी अवधि में हमारे ई-मेल पते editor.raildarpan@gmail.com पर हिंदी रचनाएँ PDF फॉर्मेट में तथा अंग्रेजी रचनाएँ Word Document में मेल कर सकते हैं। डाक के ज़रिये रचनाओं के प्रेषण के लिए हमारा पता है:-

प्रधान सम्पादक
'रेल दर्पण' पत्रिका,
मुख्य जनसम्पर्क कार्यालय, पश्चिम रेलवे,
तीसरी मंज़िल, स्टेशन भवन, चर्चगेट, मुंबई - 400 020.
www.wr.indianrailways.gov.in

Designed by: Snappers Advtg. & Printed by: M/s Graphtone for CPRO, Western Railway, Churchgate Mumbai - 400 020.